आरंभिक स्तर पर पहेलियों द्वारा शिक्षण-अधिगम

आरोही*
नरेश कुमार**

बच्चों की शिक्षा में पहेलियों का विशेष महत्व होता है। पहेलियाँ बालमन पर अत्यधिक प्रभाव डालती हैं। ये न केवल बच्चों का मनोरंजन करती हैं; अपितु उनमें मूल्यों, भाषा, तार्किकता एवं कल्पनाशीलता का भी विकास करती हैं। इसके अतिरिक्त पहेलियाँ बच्चों में, खेल-खेल में सीखने में भी महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका का निर्वाह करती हैं। पहेलियाँ जहाँ एक ओर बुनियादी एवं आरंभिक स्तर पर बच्चों की शिक्षा एवं अधिगम को सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं तो वहीं दूसरी ओर ये बच्चों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन और विकास को विशेष दिशा एवं आधार प्रदान करती हैं। पहेलियों के माध्यम से शिक्षण-अधिगम बड़ी ही सहजता एवं रुचिकर ढंग से किया जा सकता है तथा अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। इस लेख में पहेलियों की विशेषताएँ, उपयोगिता एवं लाभ, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पहेलियों का अनुप्रयोग, पहेलियों के निर्माण में ध्यान देने योग्य बातें, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पहेलियों के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापक की भूमिका आदि के विषय में चर्चा की गई है।

पहेलियाँ वास्तव में मानव सभ्यता के आदिकाल से ही मनोरंजन, आनंद एवं शिक्षा का प्रमुख और प्रभावशाली साधन रही हैं। प्राचीन काल से ही मनुष्य विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक, सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भों में इनका प्रयोग करता आ रहा है। इसके अतिरिक्त यदि हम पहेलियों को भाषा की प्रासंगिकता एवं जीवंतता के संदर्भ में देखें तो *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अंतर्गत इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि भारतीय भाषाओं के शिक्षण एवं अधिगम को विद्यालय और शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। भाषाएँ प्रासंगिक और जीवंत बनी रहें, इसके लिए इन भाषाओं में उच्च गुणवत्तापूर्ण अधिगम एवं प्रिंट सामग्री का सतत प्रवाह बने रहना चाहिए जिनमें पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, नाटक, कविताएँ, पत्रिकाएँ आदि सम्मिलित हैं। यदि वर्तमान समय की बात करें तो यह कहा जा सकता है कि पहेलियाँ न केवल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को मनोरंजक एवं

**शोधार्थी*, दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, दिल्ली 110042
***असिस्टेंट प्रोफेसर*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली 110016

रुचिकर बनाती हैं, अपितु ये बच्चों के अधिगम को एक विशेष आधार एवं उनकी शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान करती हैं।

पहेली का अर्थ या पहेली क्या है?

पहेली शब्द संस्कृत भाषा के 'प्रहेलिका' एवं 'प्रहेलि' शब्द से लिया गया है। पहेली को 'बुझौवल' भी कहा जाता है। वैसे तो पहेली का कोई एक सर्वमान्य अथवा सुनिश्चित अर्थ नहीं है, परंतु इसके अर्थ को निम्न आधारों अथवा संदर्भों के आधार पर समझा जा सकता है—

- पहेली वास्तव में एक घुमावदार प्रश्न है, जिसमें उत्तर से संबंधित संकेत छिपे होते हैं।
- पहेली एक ऐसा कथन, वाक्य, वर्णन एवं प्रश्न है जिसका अप्रत्यक्ष अर्थ होता है और जिसे हल करने के लिए एक 'बुझौवल' के रूप में व्यक्ति के समक्ष रखा जाता है।
- पहेली क्रमबद्ध भाषायी शब्दों का एक समूह अथवा समुच्चय है, जिसमें पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर निहित होता है अथवा उसकी ओर संकेत करता है।
- किसी बात अथवा कथन को घुमा-फिराकर कहना, जिससे कि सुनने वाले उसका उत्तर आसानी से न दे सके, पहेली कहलाती है।
- जब किसी प्रश्न को इस तरह से पूछा जाए, जिससे कि उसके उत्तर से संबंधित संकेत उसके अंदर ही समाहित हो, तब वह प्रश्न पहेली कहलाता है।
- पहेली एक ऐसी अभिव्यक्ति है, जिसमें एक अथवा एक से अधिक वर्णनात्मक तत्व होते हैं और इन तत्वों के आधार पर ही उत्तर का अनुमान लगाया जाता है।
- पहेली किसी व्यक्ति की बुद्धि, समझ एवं तार्किकता की परीक्षा लेने वाले प्रश्न अथवा कथन का ही एक रूप अथवा प्रकार है।
- विशेष भाषा एवं तुकबंदी आदि का प्रयोग करते हुए घुमा-फिराकर एवं भ्रामक रूप में पूछे अथवा प्रस्तुत किए गए प्रश्न, वाक्य अथवा कथन को पहेली कहा जाता है।
- व्यक्ति की बुद्धि एवं समझ को चुनौती देने वाले प्रश्न, कथन अथवा वाक्य पहेली कहलाते हैं;

जैसे—प्रथम कटे तो 'दर' बन जाऊँ,
अंत कटे तो 'बंद' हो जाऊँ।
केला मिले तो खाता जाऊँ,
बच्चों बतलाओ मैं क्या कहलाऊँ?
उत्तर— बंदर

नाप-नाप कर चलती हूँ मैं,
कभी न राह बदलती हूँ मैं।
सबको सचेत रखती हूँ मैं,
हर घर में मिलती हूँ मैं।
उत्तर— घड़ी

पहेलियों की विशेषताएँ

पहेलियों से संबंधित कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. पहेलियाँ अधिगम को सरल, रुचिकर एवं मनोरंजक बनाती हैं।
2. पहेली पढ़ने, सुनने एवं बोलने में बड़ी ही मजेदार, रुचिकर एवं कर्णप्रिय होती है।
3. पहेलियाँ बच्चों की तर्कशक्ति को विकसित करते हुए, उन्हें अधिगम के लिए प्रेरित करती हैं।
4. पहेलियाँ विद्यार्थियों के अधिगम को एक विशेष गति एवं दिशा प्रदान करती हैं।

5. पहेलियाँ बच्चों के मानसिक विकास एवं बौद्धिक सामर्थ्य को बढ़ाने में बहुत ही सहायक सिद्ध होती हैं।
6. पहेलियाँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं।

पहेलियों की उपयोगिता एवं लाभ

1. पहेली खेल-खेल में सीखने का एक प्रभावशाली माध्यम है।
2. पहेलियाँ विद्यार्थियों में समस्या-समाधान कौशल विकसित करने में सहायक होती हैं।
3. पहेलियाँ विद्यार्थियों में तर्कशक्ति एवं चिंतनशक्ति का उचित विकास करती हैं।
4. पहेलियाँ विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने और जटिल वस्तुओं को समझने में विशेष रूप से सहायक होती हैं।
5. पहेलियाँ विद्यार्थियों के अधिगम के संदर्भ में एक दिमागी खेल हैं, जिससे शिक्षक-विद्यार्थियों के आपसी संबंध अच्छे बनते हैं।
6. पहेलियाँ सामाजिक एवं व्यावहारिक बातों और विभिन्न संदर्भों को जानने एवं समझने में सहायक होती हैं।
7. पहेलियाँ विभिन्न प्रकार की अवधारणाओं को समझने-समझाने एवं स्मरण करने के संदर्भ में सहायक होती हैं।
8. पहेली शिक्षण-अधिगम के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कौशल है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान में व्यापक वृद्धि की जा सकती है।
9. पहेलियाँ मानसिक सजगता एवं निरीक्षण क्षमता के विकास का एक मनोरंजक, महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली साधन हैं।
10. पहेलियाँ वाक्य, वाक्यांशों, प्रश्नों एवं कथनों आदि में छिपे हुए अर्थ अथवा अर्थों की पहचान करने में विद्यार्थियों को विशेष सहायता प्रदान करती हैं।
11. पहेलियों के माध्यम से किसी प्रकरण विशेष को विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
12. पहेलियाँ विषय-वस्तु को आत्मसात करने में सहायक सिद्ध होती हैं।
13. पहेलियाँ न केवल विद्यार्थियों में स्वाध्याय, तार्किकता, कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता का विकास करती हैं; अपितु उनमें विभिन्न जीवन मूल्यों एवं भाषायी कौशलों आदि का भी उचित विकास करती हैं।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पहेलियों का अनुप्रयोग

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पहेलियों के अनुप्रयोग के संदर्भ में प्रस्तुत पहेलियों एवं क्रियाकलापों की रचना कक्षा—3, 4 एवं 5; विषय— हिंदी, पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* को आधार बनाकर की गई है। ये समस्त पहेलियाँ एवं उनसे जुड़े क्रियाकलाप प्रत्यक्ष रूप से दिए गए पाठ एवं प्रकरण या विषयवस्तु से संबंधित हैं। पहेलियों के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापक से यह अपेक्षित है कि वह अपने विवेकानुसार इनमें अपेक्षित एवं वांछित परिवर्तन कर अथवा ला सकता है।

विषय—हिंदी (कक्षा 3)

पाठ—कक्कू

पहेली 1

दो अक्षर से मैं बनता हूँ,
सबके काम मैं आता हूँ।
स्कूल के रजिस्टर में लिखा जाता हूँ,
बतलाओ मैं क्या कहलाता हूँ?

उत्तर— नाम

क्रियाकलाप 1

'वादा' शब्द का अर्थ है—

समझ | इरादा
वचन | खुशी

क्रियाकलाप 2

चित्र में दिखाए गए इस पक्षी को पहचान कर सही उत्तर पर गोला लगाइए।

चिड़िया | कोयल
कौआ | तोता

पहेली 2

कुहू-कुहू कर बोलती,
डाली-डाली पर डोलती।
सब बच्चों के मन को भाती,
बतलाओ वह क्या कहलाती?

उत्तर— कोयल

क्रियाकलाप 1

नीचे कोयल का चित्र दिया गया है, उसमे रंग भरिए।

क्रियाकलाप 2

नीचे दी गई बोलियों में से कोयल की बोली पहचानिए और उस पर सही (✓) का निशान लगाइए।

काँव-काँव | गुटर-गूँ
कुहू-कुहू | टर्र-टर्र

पहेली 3

नाक के नीचे बड़ी गुफा में,
बैठे बत्तीस पहरेदार।
कक्कू फुलाए इसे हर बार,
चाहे घर या हो बाहर।

उत्तर— मुँह

क्रियाकलाप 1

दिए गए चित्रों के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

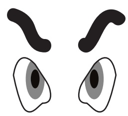

1. मैं हूँ______________,
   मैं देखने के काम आती हूँ।

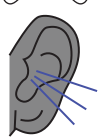

2. मैं हूँ______________ ,
   मैं सुनने के काम आता हूँ।

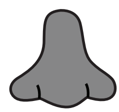

3. मैं हूँ______________,
   मैं सूँघने के काम आती हूँ।

क्रियाकलाप 2

नीचे दिए गए स्थान पर उड़ने वाले और नहीं उड़ने वाले जीवों के नाम लिखिए।

उड़ने वाले जीव	नहीं उड़ने वाले जीव

विषय—हिंदी (कक्षा 4)

पाठ— मन के भोले-भाले बादल

पहेली 1

काले-काले ये मतवाले,
मासूम-सी सूरत वाले।
धरती की प्यास बुझाते,
बतलाओ ये क्या कहलाते?

उत्तर— बादल

क्रियाकलाप 1

बच्चों, आपने विभिन्न प्रकार के बादल देखे होंगे? उनमें से किसी एक बादल का चित्र नीचे दी गई जगह में बनाइए और रंग भरिए।

क्रियाकलाप 2

बादलों में पानी कहाँ से आता है? विचार कीजिए और नीचे दी गई जगह में लिखिए।

पहेली 2

जंगल का मैं राजा हूँ,
सबको बहुत डराता हूँ।
दहाड़ मेरी निराली है,
सब जानवरों पर भारी है।

उत्तर— शेर

क्रियाकलाप 1

नीचे दिए गए निर्देशों को पढ़कर शेर के चेहरे का मास्क बनाइए।

1. एक मोटा कागज़ या गत्ता लीजिए और उस पर शेर के चेहरे का चित्र बनाइए।
2. चित्र की बाहरी रेखा को स्केच पेन से बनाइए।
3. एक कैंची की सहायता से चित्र को काट लीजिए।
4. चित्र में अपनी पसंद के अनुसार रंग भरिए।
5. मास्क को पहनने के लिए डोरी या रिबन लगाइए।

क्रियाकलाप 2

जंगल के हर एक जानवर की अपनी भूमिका होती है। सोचिए और बताइए, यदि शेर जंगल में न रहे तो क्या होगा?

पहेली 3

देखो आकाश में बादल छाए,
कौन-सा खज़ाना साथ में लाए?
नहीं हो अगर तो अकाल पड़ जाए,
ज़्यादा हो तो बाढ़ आ जाए।

उत्तर— वर्षा या बारिश

क्रियाकलाप 1

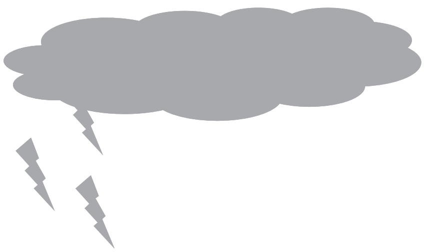

धरती पर बारिश क्यों ज़रूरी है?

क्रियाकलाप 2

नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इन पंक्तियों में दिए गए शब्द उलट-पलट हो गए हैं। इन शब्दों को सही क्रम में लगाते हुए नीचे दिए गए बॉक्स में लिखिए।

बालों झब्बर झब्बर वाले,
वाले गुब्बारे से गालों।
आसमान में दौड़ने लगे,
काले बादल झूम-झूम कर।

विषय—हिंदी (कक्षा 5)

पाठ—फसलों के त्योहार

पहेली 1

खिचड़ी बनाओ, खिचड़ी खाओ,
खिचड़ी का त्योहार मनाओ।
खिचड़ी से तुम क्या समझे हो,
हमें भी इसका अर्थ बताओ?

उत्तर— एक प्रकार का भोजन अथवा एक त्योहार का नाम

क्रियाकलाप 1

आपके घर पर भी खिचड़ी बनाई जाती होगी। अपने माता-पिता से पता करके लिखिए कि उसमें क्या-क्या चीज़ें डाली जाती हैं?

क्रियाकलाप 2

अपने माता-पिता अथवा दादा-दादी से खिचड़ी बनाने की विधि पता कीजिए और उसे नीचे लिखिए।

खिचड़ी बनाने की विधि

पहेली 2

आसमान में छाई पतंगें,
सबके मन को भाई पतंगें।
सबके मन में भर दे प्यार,
कौन-सा है पतंगों का त्योहार?

उत्तर— मकर सक्रांति

क्रियाकलाप 1

आगे दिए गए स्थान पर पतंग का चित्र बनाइए और उससे संबंधित पाँच वाक्य लिखिए।

वाक्य

क्रियाकलाप 2

यदि आपको पतंग उड़ाने के लिए कहा जाए तो इसके लिए आप कौन-कौन सी तैयारी करेंगे?

1.

2.

3.

4.

5.

6.

पहेली 3

झारखंड में इसे मनाते,
चार दिनों तक जश्न मनाते।
साल के पेड़ की पूजा करते,
मिलकर ढोल-मंजीरे बजाते।

उत्तर— सरहुल

क्रियाकलाप 1

आपने अभी हाल ही में जो त्योहार मनाया है, उससे संबंधित चित्र बनाइए और नाम लिखिए।

त्योहार का नाम चित्र—

क्रियाकलाप 2

आपके क्षेत्र या राज्य में फ़सलों से जुड़ा कौन-सा त्योहार मनाया जाता है और उस त्योहार पर आप क्या-क्या करते हैं? नीचे दिए गए स्थान में लिखिए।

त्योहारों के नाम—

1.
2.
3.
4.
5.
6.
7.
8.

पहेलियों के निर्माण में ध्यान देने योग्य बिंदु

पहेलियों के निर्माण में ध्यान देने योग्य प्रमुख बिंदु अथवा सावधानियाँ इस प्रकार हैं—

1. पहेलियाँ सरल, स्पष्ट, मनोरंजक एवं रुचिकर होनी चाहिए।
2. पहेलियों में शब्दों का चयन बहुत ही सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।
3. पहेलियों की भाषा विद्यार्थियों की कक्षा एवं आयु के अनुरूप होनी चाहिए।
4. पहेलियाँ विद्यार्थियों को विवेकपूर्ण एवं तर्कपूर्ण सोचने, विचार करने एवं उत्तर देने के लिए प्रेरित एवं विवश करने वाली होनी चाहिए।
5. पहेलियाँ बच्चों के सामाजिक, शैक्षणिक एवं आस-पास के परिवेश तथा व्यावहारिक दिनचर्या से जुड़ी होनी चाहिए।
6. पहेलियाँ बच्चों के लिए अधिगम का मार्ग प्रशस्त करने वाली होनी चाहिए।
7. पहेलियाँ बच्चों को सीखने के लिए दिशा प्रदान करने एवं अभिप्रेरित करने वाली होनी चाहिए।
8. शिक्षण-अधिगम के संदर्भ में पहेलियों की रचना संबंधित प्रकरण एवं पाठ से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी अथवा संबंधित होनी चाहिए।
9. पहेलियों के निर्माण में मौलिकता एवं नवीनता का उचित समावेश होना चाहिए।

***बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के विशेष संदर्भ में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में पहेलियों की भूमिका**

शिक्षा के निरंतर विकसित होते परिदृश्य में, *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में कार्य करती है, जो

शिक्षार्थियों के शैक्षिक अनुभवों को आकार देती है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* के अनुसार, बुनियादी स्तर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पहेलियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान कौशल और भाषा विकास को बढ़ावा देती हैं तथा शिक्षार्थियों के लिए रचनात्मक और आकर्षक तरीके से सीखने को बढ़ावा देती हैं। *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के विशेष संदर्भ में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में पहेलियों की भूमिका को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है—

1. **पहेलियों के महत्व को समझना**— भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं से परे, पहेलियाँ सदियों से मानव संस्कृति का एक अभिन्न अंग रही हैं। पहेलियाँ जहाँ एक ओर जिज्ञासा को उत्तेजित करती हैं, वहीं दूसरी ओर तार्किकता को बढ़ावा देती हैं एवं शिक्षार्थियों को विविध दृष्टिकोण से सोचने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के अनुसार पहेलियाँ विद्यार्थियों को सामग्री के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का एक मूल्यवान अवसर प्रदान करती हैं एवं शिक्षार्थियों को अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान करती हैं।
2. **ज्ञान संबंधी विकास**— बुनियादी स्तर पर एक सुदृढ़ शैक्षिक नींव के निर्माण के लिए संज्ञानात्मक विकास महत्वपूर्ण है। पहेलियाँ युवा मस्तिष्क को चुनौती देती हैं, उन्हें जानकारी का विश्लेषण करने, संबंध बनाने और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करती हैं। पहेली की पेचीदगियों से जूझकर, विद्यार्थी अपने समस्या समाधान कौशल को निखारते हैं, स्मृति प्रतिधारण बढ़ाते हैं और अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित करते हैं।
3. **भाषा विकास**— पहेलियाँ भाषायी रत्न हैं, जो मनोरंजक और परस्पर संवादात्मक तरीके से भाषा के विकास को सुविधाजनक बनाती हैं। ये विद्यार्थियों को समृद्ध शब्दावली, आलंकारिक भाषा और भाषायी बारीकियों से परिचित कराती हैं। पहेली को समझने की प्रक्रिया में न केवल शब्दों को समझना सम्मिलित है, बल्कि दिए गए संदर्भ में उनके अर्थ को समझना भी सम्मिलित है। ये भाषायी निपुणता, भाषा अधिग्रहण और संचार कौशल को भी निखारती हैं।
4. **सांस्कृतिक प्रासंगिकता**— पहेलियाँ सामान्यत: सांस्कृतिक अर्थ रखती हैं, जिससे वे पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक तत्वों को एकीकृत करने के लिए एक मूल्यवान उपकरण बन जाती हैं। *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* शिक्षा के लिए एक प्रासंगिक दृष्टिकोण पर बल देती है, विविध संस्कृतियों से पहेलियों को सम्मिलित करने से समावेशिता की भावना को बढ़ावा मिलता है और विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का विस्तार होता है। पहेलियाँ पाठ्यक्रम और शिक्षार्थियों के वास्तविक दुनिया के अनुभवों के बीच एक पुल के रूप में कार्य करती हैं।
5. **रचनात्मकता को बढ़ावा देना**— रचनात्मकता शिक्षा के लिए *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के दृष्टिकोण की आधारशिला है। पहेलियाँ,

अपनी कल्पनाशीलता के साथ, विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने के लिए एक चित्रफलक (कैनवास) प्रदान करती हैं। चाहे अपनी स्वयं की पहेलियाँ बनाना हो या जटिल पहेलियों को समझना हो, विद्यार्थियों को रचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे कि विद्यार्थियों का सीखने के प्रति लगाव को बढ़ावा मिल सके।

6. **सामाजिक और भावनात्मक सीख**— संज्ञानात्मक और भाषायी विकास से परे, पहेलियाँ विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक कल्याण में योगदान देती हैं। सहयोगात्मक समस्या-समाधान, जैसा कि सामान्यत: किसी पहेली को सुलझाने में आवश्यक होता है, जबकि समूह कार्य (टीम वर्क) संचार कौशल को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त एक चुनौतीपूर्ण पहेली को सफलतापूर्वक हल करने से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है, जिससे उपलब्धि और लचीलेपन की भावना पैदा होती है, जो *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के समग्र दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

अतः यह कहा जा सकता है कि *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के अनुरूप शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में पहेलियों को सम्मिलित करना, एक गतिशील और आकर्षक शैक्षिक वातावरण बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पहेलियाँ रटने की पारंपरिक सीमाओं को पार करती हैं। ये अनुभवात्मक, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और रचनात्मक रूप से प्रेरक शिक्षा का प्रवेश द्वार प्रदान करती हैं। संज्ञानात्मक, भाषायी और सामाजिक-भावनात्मक विकास को बढ़ावा देकर, पहेलियाँ भविष्य के जिज्ञासु बच्चों के पोषण के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती हैं।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पहेलियों के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापक की भूमिका

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पहेलियों के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापक की भूमिका इस प्रकार हो सकती है—

1. अध्यापक की पहेलियों में विशेष रुचि होनी चाहिए।
2. अध्यापक को विभिन्न प्रकार की पारंपरिक व्यावहारिक एवं प्रचलित पहेलियों का उचित ज्ञान अथवा जानकारी होनी चाहिए।
3. अध्यापक विद्यार्थियों की आयु एवं कक्षा स्तर के अनुरूप प्रकरण तथा विषय-वस्तु पर आधारित पहेलियों की रचना करने में सक्षम हो।
4. अध्यापक को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की पहेलियों का अनुप्रयोग करने की क्षमता हो।
5. अध्यापक को पहेलियों पर आधारित क्रियाकलाप एवं गतिविधियों की रचना करने से संबंधित उचित ज्ञान एवं दक्षता प्राप्त हो।
6. अध्यापक को इस बात की भी उचित समझ अथवा जानकारी होनी चाहिए कि किसी पाठ के आरंभ, मध्य एवं अंत में पहेलियों का प्रयोग किस प्रकार से किया जाए।

7. अध्यापक में पहेलियों के माध्यम अथवा उनका अनुप्रयोग करते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, रुचिकर, मनोरंजक एवं प्रभावशाली बनाने की क्षमता हो।
8. अध्यापक की स्वयं रचित अथवा विषय-वस्तु आधारित पहेलियों की रचना करने में विशेष रुचि हो एवं इस संदर्भ में वह आवश्यकता के अनुरूप पहेलियों का निर्माण करने में सक्षम हो।
9. पहेलियों के अनुप्रयोग के संदर्भ में अध्यापक द्वारा इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि पहेलियाँ न केवल रुचिकर, मनोरंजक, आनंददायी एवं प्रभावी हों, बल्कि वे विद्यार्थियों के अधिगम को दिशा प्रदान करें एवं उन्हें अभिप्रेरित भी करती हों।

निष्कर्ष

बच्चों की शिक्षा एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पहेलियाँ महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। ये न केवल अधिगम को सरल, मनोरंजक एवं रुचिकर बनाती हैं; अपितु ये समस्याओं का समाधान ढूँढने और जटिल वस्तुओं एवं अवधारणाओं को समझने में भी विशेष सहायक सिद्ध होती हैं। ये विद्यार्थियों की तर्कशक्ति एवं चिंतनशक्ति का भी उचित विकास करती हैं अर्थात उनके बौद्धिक सामर्थ्य को बढ़ाती हैं। इसके अतिरिक्त पहेलियाँ विद्यार्थियों में भाषायी कौशलों एवं नीतिगत मूल्यों आदि को विकसित करने में भी बहुत ही सहायक सिद्ध होती हैं तथा बच्चों की शिक्षा एवं अधिगम को एक सुदृढ़ दिशा एवं आधार प्रदान करती हैं।

संदर्भ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. *रिमझिम-3,* तीसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक. रा.शै.अ.प्र. प., नई दिल्ली.

———. *रिमझिम-4,* तीसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक. रा.शै.अ.प्र. प., नई दिल्ली.

———. *रिमझिम-5,* तीसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक. रा.शै.अ.प्र. प., नई दिल्ली.

———. *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022.* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.